L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A. PART- II
B.A. PAPER - II
social psychology
psychology (Honours)
TOPIC - processes of social change, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया

Dr. Pramod Kumar Yadav
Assistant Professor
Guest Teacher,
V.S.J. college - Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumaryadav2018@gmail.com

गिलिन और गिलिन 1950 के अनुसार, सामाजिक परिवर्तन की सर्व स्वीकृत विधियों में होने वाले परिवर्तनों से है। चाहे वह परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के कारण हो सांस्कृतिक साधनों जनसंख्या के रूप अथवा एक समूह में आविष्कार या सांस्कृतिक प्रसार उत्पन्न हुए हों। किंग्सले 1956 के अनुसार - सामाजिक परिवर्तन संरचना में परिवर्तन से है। जैसे - समाज की आकार, इसके भागों की बनावट तथा उनके संतुलन या संगठन के प्रकार।

(I) नवी प्रवृत्ति - (Innovation) :- बर्नार्ड ने यह विचार व्यक्त किया है कि परिवर्तनों की प्रक्रिया नयी ही नयी प्रवृत्ति से ही प्रारम्भ होती है क्योंकि प्रवृत्ति या नवाचार किसी समाज में होता है तभी सामाजिक परिवर्तन संभव होता है। किसी समाज के लोग यदि प्रगतिशील विचार के होते हैं अथवा नई प्रवृत्ति और नवाचारों का स्वागत करते होते हैं। एक समाज में नई प्रवृत्ति और नवाचारों का कितना स्वागत होगा, यह अनेक कारकों पर निर्भर करता है। इन कारकों में सम्प्रेषण के साधन, सदस्यों की शिक्षा, सदस्यों की अभिवृत्तियाँ, आदि कुछ प्रमुख कारक है।

(II) सामाजिक स्वीकृति :- किसी भी समाज में नई प्रवृत्ति या नवाचार के कारण सामाजिक परिवर्तन तब तक नहीं होगा जब तक कि नई प्रवृत्ति या नवाचार को समाज के अधिकांश लोगों की स्वीकृत प्राप्त नहीं हो जाती। नई प्रवृत्ति या नवाचार को प्रारम्भ में समाज के प्रगतिशील व्यक्तियों द्वारा ही सामाजिक स्वीकृति दी जाती है। फिर धीरे-धीरे समाज के अन्य व्यक्ति इनको अपनी

स्वीकृति प्रदान करते हैं। यह किसी भी कुछ कल्पना में देखा गया है कि एक समाज के लोग जितने ही अधिक रूढ़िवादी और परम्परावादी होंगे वे नवाचारों और नई-प्रतिमानों की उतनी स्वीकृति उतनी ही देर से प्रदान करते हैं।

(iii) सामान्यीकृत लाना - सामाजिक परिवर्तन प्रक्रिया का तीसरा महत्वपूर्ण पद सामान्यीकृत लाना है। जिस किसी नवाचार को नई-प्रकृति को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो जाती है। उस नवाचार या नई-पद्धति से उपयोगी-अनुपयोगी और असामान्य उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाएं स्पष्ट हो सकते हैं सफलतापूर्वक लागू की जाती है। पुरानी पद्धतियों की अपेक्षा नई-पद्धतियाँ अधिक तेजी से स्वीकार किये जाते हैं। जब पुरानी पद्धतियाँ अनुपयोगी और असुविधापूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए हरित-क्रांति का प्रारम्भ में केवल साहसी और प्रगतिशील व्यक्तियों द्वारा ही स्वागत किया गया, बाद में समाज के अन्य लोगों ने इसे अपनाया।

(iv) एकीकरण :- सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया का चौथा महत्वपूर्ण पद एकीकरण है। जिस प्रकार अनुपयोगी और असुविधापूर्ण चीजों को समाज के लोग सामाजिक परिवर्तन में लागू करते हैं। उसी प्रकार से उपयोगी और सुविधापूर्ण बातें या चीजें समाजीकरण प्रक्रिया में एकीकृत होती चली जाती हैं।

सामाजिक परिवर्तन प्रक्रिया के उपर्युक्त चार पदों का वर्णन (मरडोक 1955) ने किया है। इसके अतिरिक्त इस प्रक्रिया से संबंधित कुछ अन्य पदों का वर्णन निम्न प्रकार से है।

(v) यह एक चक्रवत प्रक्रिया है। कुछ विद्वानों का विचार है कि सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया चक्रवत होती है। अर्थात जो सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं वह धीरे-धीरे आगे बदल जायेंगे और बदलते-बदलते भविष्य में फिर उसी प्रकार के ही समान परिवर्तन होंगे यह सोचा जाता है

प्रक्रिया को पुष्टि करते हैं एवं सामाजिक परिवर्तन के विकास को चक्र और क्रमान्तर चक्र बताते हैं।

(vi) विकासवादी प्रक्रिया - सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया को विकासवाद के सिद्धान्त के आधार पर भी समझाया जा सकता है। डार्विन के विकासवाद सिद्धान्त में यह कहा गया है कि प्रत्येक प्राणी को जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस संघर्ष में वही प्राणी सफलता प्राप्त करते हैं जो शारीरिक रूप से सक्षम और शक्तिशाली होते हैं। डार्विन का यह विकासवाद सिद्धान्त सामाजिक परिवर्तनों पर भी लागू होता है। यह देखा गया है कि समाज में वही सामाजिक परिवर्तन स्थायी रहते हैं अथवा उन्हीं का अस्तित्व रह पाता है जो समाज के सदस्यों के लिए उपयोगी और आवश्यक होते हैं। अनावश्यक व अनुपयोगी परिवर्तन सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया में स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

(vii) प्रगति के रूप में सामाजिक परिवर्तन - समाज की रीति-रिवाज, रूढ़ियाँ, जनरीतियाँ, मूल्य, नियम आदि पुराने हो जाते हैं अथवा उनकी उपयोगिता कम हो जाती है तब उनमें उपयोगिता की दृष्टि से कुछ न कुछ परिवर्तन आवश्यक होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि समाज में जो भी सामाजिक परिवर्तन होते हैं वह किसी न किसी रूप में समाज के लिए उपयोगी होते हैं। अथवा समाज की प्रगति में सहायक होते हैं।

(8) अनुकूलन प्रक्रिया : सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया धीरे धीरे सम्पूर्ण होती है, और जैसे जैसे समाज में यह परिवर्तन होते हैं उनके साथ-साथ समाज के लोग परिवर्तनों का अनुकरण करते जाते हैं। अथवा परिवर्तनों के साथ-साथ स्वयं का अनुकूलन करते हैं।

(ix) क्रांति के रूप में परिवर्तन - यह पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया धीरे: धीरे: चलने वाली

सतत प्रक्रिया है। लेकिन कभी कभी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया समाज में एक क्रांति के रूप में भी घटित हो सकती है। क्रांति के रूप में सामाजिक परिवर्तन बहुत तीव्र होता है। वास्तव में कुछ प्रकार के सामाजिक परिवर्तन एक समाज में तभी घटित होते हैं। जब कि प्रथा और परम्परा उतनी अनुपयोगी हो जाती है। कि सामाजिक स्तर पर उसे कुछ देना शेष होता है।

जन्म के समय बालक न सामाजिक होता है। और न ही असामाजिक वह केवल एक जीवित पुतला होता है। उसकी शारीरिक क्षमता उतनी कम होती है। कि उसे अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी पर निर्भर रहना पड़ता है। असहाय नवजात शिशु अपनी माँ और परिवार पर निर्भर रहता है। उसकी भाषा का स्तर प्रथम चरण का होता है। अतः उसे अपनी आवश्यकताओं को दूसरों को समझाने में कठिनाई होती है। समाज के प्रारम्भ से ही माता-पिता की यह समस्या रही है। कि बच्चों का पालन-पोषण किस प्रकार किया जाए कि वह बड़ा होकर समाज का योग्य और उत्तरदायी सदस्य बन सके। यह समस्या अकेले माता-पिता की ही नहीं बल्कि संसार के सभी समूहों और समाजों की है। यह समाज चाहे छोटा हो अथवा बड़ा। समाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है। जिससे व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक संसार से परिचय प्राप्त करता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 18/09/2020
Sub - Psychology